संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-२१ ● २१ मई २०१६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष तृतीया संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३१२०

वर्तमान युग में वेदों का महत्त्व

-डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

परमपिता परमेश्वर ने जब सृष्टि का निर्माण किया तब सृष्टि में अनेक विधि जड़-चेतनों का निर्माण किया। इन नाना विधि जड़-चेतन में यदि कोई सर्वश्रेष्ठ है तो वह है मनुष्य। जैसे परमात्मा ने अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को बनाया है ठीक वैसे ही मनुष्यों ने भी अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में संसार का निर्माण किया है। इसलिए मनुष्य को समाजिक प्राणी कहा जाता है। मनुष्य ने जिस प्रकार के नियम और व्यवस्था की है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने पूर्णरूप से परमात्मा की नकल की है क्योंकि परमेश्वर अपने द्वारा निर्मित सृष्टि के नियमों के सदैव अनुकूल रहता है वैसे ही मनुष्य अपने द्वारा निर्मित समाज के नियमों में बंधा हुआ होता है। इस प्रकार हम इसके मूल को खोजे तो हमें ज्ञात होता है कि अनुशासन में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। परमेश्वर अपने द्वारा निर्मित सृष्टि नियमों के सर्वदानुकूल रहता है। क्योंकि परमेश्वर अपने आप में अनुशासित होता है। यदि परमेश्वर अनुशासित नहीं होता तो प्रतिदिन प्रलय और निर्माण करता रहता। वह १४ मनवन्तरों के इतने लम्बे समय की प्रतीक्षा नहीं करता। जिस समय जो चाहता वहीं करता। इसी अनुशासन को हम जड़-चेतन दोनों में ही देख सकते हैं। जड़रूपी सूर्य यदि अनुशासन के अन्दर नहीं होता तो वह अपनी इच्छा से निकलता और डूबता, परन्तु ऐसा नहीं है।

इसीलिए अनुशासन की नितान्त अनिवार्यता है। इसी कारण अनुशासन के अभाव में अव्यवस्था न फैल जाये। इस प्रकार सोचकर परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में चार सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को वेद का ज्ञान दिया। इस वेद के ज्ञान से सम्पूर्ण प्राणी मात्र अनुशासन सहित अनेक विधि ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करे व करावें और धर्म-अर्थ- काम और मोक्ष को प्राप्त होवें।

पशुओं को अपने जन्म के पश्चात् माँ के स्तनपान करना सीखना नहीं पड़ता। पशुओं में जन्म से ही तैरने का गुण विद्यमान होता है। पशुओं की संवेदन शक्ति बहुत तीव्र होती है। इस बात को वैज्ञानिक लोग भी स्वीकार करते हैं। इसीलिए तो जब कोई मन्त्री या नेता आदि लोग आते हैं उनके सेवक गण गुप्त स्फोट पदार्थों को ढूढ़ने के लिए मशीन के साथ-साथ कुत्तों को भी लेकर आते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि पशु जन्म से ही पूर्ण है। वो भोगों को भोगने के लिए इस सृष्टि पर

शेष पृष्ठ ४ पर

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

संस्था के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक– 09 जून, 2019 दिन रविवार तद्नु ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को पूर्वाह्न 11.00 बजे से संस्था प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला, नैनीताल में सम्पन्न होगी, जिसमें आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय एवं अनिवार्य है।

प्रवेशनीय विषयगत एजेण्डा पंजीकृत डाक द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को भेजे जा रहे हैं।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती- सभा मंत्री

ओ३म्

आर्य समाज बल्देव आश्रम खुर्जा द्वारा आयोजित

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक 22 मई से 28 मई 2019 तक

स्थान : आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज, खुर्जा

प्रशिक्षण
प्रवेश आर्या
राष्ट्रीय अध्यक्ष
बेटी बचाओ अभियान

प्रशिक्षण
पूनम आर्या
राष्ट्रीय संयोजिका
बेटी बचाओ अभियान

शिविर संयोजिका
श्रीमती शशीबाला
प्रधानाचार्या- आर्यकन्या
पाठशाला खुर्जा

संरक्षक
डॉ0 धीरज सिंह
प्रधान-आर्य प्रतिनिधि
सभा उ०प्र०

निवेदक : – घनश्याम दास सक्सेना (प्रधान), रामस्वरूप आर्य (मंत्री), नरेन्द्र पाल बाधवा (कोषाध्यक्ष), – आर्य समाज खुर्जा संजय वर्मा (कोषाध्यक्ष प्रबन्ध समिति, आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज खुर्जा)

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

गुरूकुल शिक्षा का महत्त्व

प्राचीन काल से हमारे देश में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे भारत में गुरूकुल परम्परा सबसे पुरानी व्यवस्था है। गुरूकुलम वैदिक युग से ही अस्तित्व में है आइये इस लेख के माध्यम से अध्ययन करते हैं कि गुरूकुलम परम्परा क्या है, किस प्रकार से पहले शिक्षा दी जाती थी और आज के युग की आधुनिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति से कैसे भिन्न है।

देश का विकास और उन्नति तब ही हो सकती है जब शिक्षा व्यवस्था सही हो जीवन में सफल होने और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। जीवन की कठिन चुनौतियों को इसके जरिये कम किया जा सकता है। शिक्षा अवधि में प्राप्त ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के बारे में आश्वस्त करता है।

प्रचीन काल से हमारे देश में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे भारत में गुरूकुल परम्परा सबसे पुरानी व्यवस्था है। गुरूकुलम वैदिक युग से ही अस्तित्व में है। प्राचीन काल में गुरूकुल शिक्षा पद्धति से ही शिक्षा दी जाती थी। भारत को विश्व गुरू इस पद्धति के कारण ही तो कहा जाता था। अब इस परम्परा का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। आइये इस लेख के माध्यम से अध्ययन करते हैं कि गुरूकुल परम्परा क्या है, किसी प्रकार से पहले शिक्षा दी जाती थी और आज के युग की आधुनिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति से कैसे भिन्न है।

गुरूकुल परम्परा क्या है? गुरूकुल का अर्थ है वह स्थान या क्षेत्र जहाँ गुरू का कुल यानी परिवार निवास करता है। प्राचीन काल में शिक्षक को ही गुरू या आचार्य मानते थे और वहाँ शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को उसका परिवार माना जाता था। आचार्य गुरूकुल में शिक्षा देते थे गुरूकुल में प्रवेश करने के लिए आठ साल का होना अनिवार्य था और पच्चीस वर्ष की आयु तक लोग यहां रहकर शिक्षा प्राप्त और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। गुरूकुल में छात्र इकट्ठे होते हैं और अपने गुरू से वेद सीखते हैं सामाजिक मानकों के बावजूद हर छात्र के साथ समान व्यवहार किया जाता था यानी यहां पर हर वर्ण के छात्र पढ़ते थे चाहे वे क्षत्रिय हो या शूद्र परिवार से, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था, जितना पढ़ने का अधिकार ब्राह्मणों को था उतना ही शूद्र को भी था। गुरूकुल का मुख्य उद्देश्य ज्ञान विकसित करना और शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करना होता था।

यहां पर धर्मशास्त्र की पढ़ाई से लेकर अस्त्र की शिक्षा भी सिखाई जाती थी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि योग साधना और यज्ञ के लिए गुरूकुल को एक अभिन्न अंग माना जाता है। यहां पर हर विद्यार्थी हर प्रकार के कार्य को सीखता है और शिक्षा पूर्ण होने के बाद ही अपना काम रूचि और गुण के आधार पर चुनता था।

उपनिषदों में लिखा गया है कि मातृ देवो भवः! पितृ देवो भवः! आचार्य देवो भवः! अतिथि देवो भवः!

अर्थात् माता–पिता, गुरू और अतिथि संसार में चार प्रत्यक्ष देव हैं, इनकी सेवा करनी चाहिए।

स्त्री और पुरूषों की समान शिक्षा को लेकर गुरूकुल काफी सक्रिय थे उदाहरण उत्तररामचरित में वाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश के साथ पढ़ने वाली आत्रेयी नामक स्त्री का उल्लेख है इससे पता चलता है कि सह शिक्षा भारत में प्राचीन काल से रही है। पुराणों में भी कहोद और सुजाता, रहु और प्रमद्वारा की कथाएं वर्णित हैं इनमें ज्ञात होता है कि कन्याएं बालाकों के साथ पढ़ती थी और उनका विवाह युवती हो जाने पर होता था।

आगे चलकर लड़के और लड़कियों के गुरूकुल अलग–अलग हो गए थे, जिस प्रकार लड़कों को शिक्षा दी जाती थी उसी प्रकार लड़कियों को भी शिक्षा दी जाती थी, शस्त्र, अस्त्र की शिक्षा तथा वेदों का ज्ञान दिया जाता था। गुरू के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए कहा गया है कि गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वर, गुरू साक्षात् परमं ब्रह्मा तस्मै गुरूवे नमः।

अर्थात् गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है और गुरू ही भगवान शंकर है, गुरू ही साक्षात परब्रह्म है ऐसे गुरू को मैं प्रणाम करता हूं।

गुरूकुल परम्परा की व्यवस्था में हमें बताती है कि देश में शिक्षाप्रणाली की व्यवस्था कितनी श्रेष्ठ थी, जिसमें अमीर–गरीब का कोई भेद नहीं था। शिक्षा पूर्ण हो जाने पर गुरू शिष्य की परीक्षा लेते थे शिष्य अपने सामर्थ्य अनुसार दीक्षा देते और समावर्तन संस्कार संपन्न कर उसे अपने परिवार को भेज दिया जाता था। आज पुनः इस प्रणाली को जागृति करने की आवश्यकता है क्योंकि यही शिक्षा हमारे भारतवर्ष को विश्व गुरू बना सकती है।

-सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

प्रश्न- जैसे परमेश्वर नित्यमुक्त, पूर्ण सुखी है वैसे ही जीव भी नित्यमुक्त और सुखी रहेगा तो कोई दोष न आवेगा।

उत्तर- परमेश्वर अनन्त स्वरूप, सामर्थ्य, गुण, कर्म स्वभाव वाला है इसलिये वह कभी अविद्या और दुःख बन्धन में नहीं गिर सकता। जीव मुक्त होकर भी शुद्धस्वरूप, अल्पज्ञ और परिमित गुण, कर्म, सवभाव वाला रहता है, परमेश्वर के सदृश कभी नहीं होता।

प्रश्न- जब ऐसी है, तो मुक्ति भी जन्म मरण के सदृश है इसलिये श्रम करना व्यर्थ है।

उत्तर- मुक्ति जन्म मरण के सदृश नहीं, क्योंकि जब तक ३६००० छत्तीस सहस्त्र वार उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है उतने समय पर्यन्त जीवों को मुक्ति के आनन्द में रहना, दुःख का न होना, क्या छोटी बात है? जब आज खाते पीते हो कल भूल लगने वाली है पुनः इसका उपाय क्यों करते हो? जब क्षुधा, तृषा, क्षुद्र धन, राज्य, प्रतिष्ठा, स्त्री, सन्तान आदि के लिये उपाय करना आवश्यक है तो मुक्ति के लिये क्यों न करना? जैसे मरना अवश्य है तो भी जीवन का उपाय किया जाता है वैसे ही मुक्ति से लौटकर जन्म में आना है तथापि उसका उपाय करना अत्यावश्यक है?

प्रश्न- मुक्ति के क्या-क्या साधन है?

उत्तर- कुछ साधन तो प्रथम लिख आये हैं परन्तु विशेष उपाय ये हैं। जो मुक्ति चाहै वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहै वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहै वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय अवयश्य करें, पृथक्-पृथक् जानें। और शरीर अर्थात् जीव पञ्चकोशों का विचेन करें। एक 'अन्नमय' जो त्वचा से लेकर अस्थिर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। दूसरा 'प्राणमय' जिसमें 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, 'उदान' जिससे कण्ठस्थ अन्न पान खैंचा जाता और बल पराक्रम होता है, 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा 'मनोमय' जिसमें मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पांच कर्म-इन्द्रियां हैं। चौथा 'विज्ञानमय' जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञान-इन्द्रियाँ जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पांचवा 'आनन्दमयकोश' जिसमें प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिकानन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोष कहते हैं। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

तीन शरीर हैं-एक 'स्थूल' जो यह दीखता है। दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेद्रियां, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्त्वों का समुदाय 'सूक्ष्मशरीर' कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहात है। इसके दो भेद हैं-एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा कारण जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा तुरीय शरीर वह कहाता है जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न जीव होते हैं। इसी समाधि संसकारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है।

इन सब कोष, अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्योंकि यह सबको विदित है कि अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होती है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया यही जीव सब को प्रेरका, सब का धर्त्ता, साक्षीकर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता भोक्ता नहीं तो उसको जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है। क्योंकि बिना जीव के जो ये सब जड़ पदार्थ हैं इनको सुख-दुःख का भोग वा पाप पुण्य कर्तृव्य कभी नहीं हो सकता। हां, इनके सम्बन्ध से जीव पाप पुण्यों का कर्त्ता और सुख दुःखों का भोक्ता है।

जब इन्द्रियां अर्थों में मन इन्द्रियों और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है वही मुक्तिजन्य सुखों को होता है। जो विपरीत वर्त्तता है वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

दूसरा साधन 'वैराग्य'- अर्थात् अर्थात् जो विवेक से सत्यासत्य को जाना हो उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्याचरण का त्याग करना विवेक है- जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव से जानकर उस की आज्ञा पालन और उपासना में तत्पर होना, उस से विरुद्ध न चलना, सृष्टि से उपकार लेना विवेक कहाता है।

तत्पश्चात् तीसरा साधन-'षट्क सम्पत्ति' अर्थात् छः प्रकार के कर्म करना-एक 'शम' जिससे अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में प्रवृत्त रखना। दूसरा 'दम' जिससे श्रोत्रादि इन्दियों और शरीर को व्यविभचारादि बुरे कर्मों से हटा कर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा 'उपरति' जिससे दुष्ट कर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा 'तितिक्षा' चाहे निन्दा, स्तुति, हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष शोक को छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना। पांचवां 'श्रद्धा' जो अथर्व वेदादि सत्य शास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा 'समाधान' चित्त की एकग्रता ये छः मिलकर एक 'साधन' तीसरा कहाता है।

चौथा 'मुमुक्षत्व' अर्थात् जैसे क्षुधा तृषातुर को सिवाय अन्न जल के दूसरा कुछ भी नहीं लगता वैसे बिना मुक्ति के साधन और मुक्ति के दूसरे में प्रीति न होना। ये चार समाधान और चार अनुबन्ध अर्थात् साधनों के पश्चात् ये कर्म करने होते हैं। इनमें से जो १-इन चार साधनों से युक्त पुरुष होता है वही मोक्ष का अधिकारी होता है।

क्रमशः

धरोहर सरलता सौम्यता सादगी की प्रतिमूर्ति-

आचार्य रघुवीर जी वेदालंकार

(राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

पत्र पत्रिकाओं में पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि वर्ष २०१८ में आय जगत् के २ देदीप्यमान नक्षत्रों को भारत के राष्ट्रपति महोदय सम्मानित करेंगे १. महावीर जी अग्रवाल पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी, २. श्री आचार्य रघुवीर जी वेदालंकार संस्कृत विभागाध्यक्ष, राजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दोनों में समानतायें भी हैं विशेषतायें भी है, गुरूकुल झज्जर में तपस्यापूर्वक पढ़ना, फिर गुरूकुल कांगड़ी में स्नातकोत्तर शिक्षा लेना फिर सामाजिक जीवन में रहकर वेद विद्या का प्रचार और प्रसार करना दोनों में समानता के गुण हैं श्री डा० महावरी जी के विषय में पूर्व लिखा जा चुका है अब डा० रघुवरी जी वेदालंकार के विषय में संक्षिप्त परिचय देकर मैं स्वयं गौरव का अनुभव कर रहा हूं कि यह सम्मान गुरूकुल परम्परा का सम्मान है प्रत्येक आर्य एवं गुरूकुल प्रेमी तथा गुरूकुल वासियों को भी गौरवान्वित होने का एक शुभ अवसर आपके द्वारा मिला है हम आपके प्रति नतमस्तक हैं।

३ जुलाई १९४५ को आचार्य रघुवीर जी वेदालंकार का जन्म मुजफ्फर नगर जिले के जड़ बड कटिया ग्राम में श्री हरि सिंह जी घर में हुआ, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करके आपने गुरूकुल झज्जर में प्रवेश लिया आचार्य तक शिक्षा प्राप्त कर आप वैराग्यवान् हो गए अपनी साधना में कई स्थानों पर गुरू की खोज में गए एक महात्मा ने आपको अपना शिष्य बना लिया और आपको पूर्ण विद्वान बनने के लिए गुरूकुल वि.वि. कांगड़ी में प्रवेश दिलाया। गुरूकुल कांगड़ी से स्नातक बनकर आप सर्वप्रथम गुरूकुल ततारपुर के आचार्य बनें गुरूकुल की स्थापना १९६५ जौ० में हुई थी और आप १९६६ में गुरूकुल आ गए थे छात्रावास निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया था उसी कार्यकाल में आपके सान्निध्य और आशीर्वाद हमें प्राप्त हुआ आप सरल और सहज प्रकृति के विद्वान् एवं कर्मठ कार्यकर्ता अधिकारी आचार्य थे भवन निर्माण के समय मिट्टी से चिनाई हो रही थी गर्मी का समय था आप पूरे शरीर पर मिट्टी का लेप कर लिया करते थे और कुछ देर के लिए मौन होकर बैठ जाते थे हम बाल स्वभाववश आपकी उस मुद्रा में चंचलता में कभी सर के ऊपर कोई मिट्टी की डली रख देते थे तो भी कभी क्रोधित नहीं हुए हमेशा प्रसन्नमन रहकर हमें अपना वात्सल्य भाव रखते थे पढ़ाने में भी बड़ी सरता से पढ़ाते थे वे सारे क्षण हमें आज भी आपको स्मरण करते ही सजीव हो जाते हैं दिनचर्या आपकी नियमित रूपेण पढन–पाठन के लिए अधिक होती थी उसमें अष्टाध्यायी याद करने की प्रेरणा आप द्वज्ञरा ही प्राप्त हुई आपको एम.ए. करना था स्वामी जी से अवकाश लेकर आप पढ़ने चले गए और गुरूकुल झज्जर के ही योग्यतम स्नातक आचार्य धर्मवीर शास्त्री जी लुहारू को अपने स्थान पर आपने नियुक्त करा दिया यह आपकी उदारता और सरलता का ही परिचायक उदाहरण रहेगा अपने पी.एच.डी. काशिका का समीक्षात्मक अध्ययन और दिल्ली वि.वि. के अन्तर्गत संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर अवकाश प्राप्त करने तक सुशोभित रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कालेजों में आपका सम्मान जनक स्थान रहा आप विद्वान् लेखक, साधक, वक्ता एवं समाज सेवी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपकी करनी और कथनी एक रहती है सम्मान, प्रशंसा से दूर रहकर एक साधक की तरह गृहस्थ आश्रम में भी आप सन्यासीवत् ही रहे आपका विवाह १९७५ में वैदिक विद्वान् आ. रघुवीर सिंह शास्त्री जी की सुपुत्री कक्षा उत्तीर्ण हैं आपके ग्राम में आर्य समाज मन्दिर है तथा आपके बड़े भाई आर्य समाज के अधिकारी पदों पर सदैव शोभायमान रहते हैं आपने अपने पुत्रों को गुरूकुल ततारपुर एवं गुरूकुल कांगड़ी में पढ़ाया। डी. लिट् की उपाधि डा. अम्बेडकर वि.वि. आगरा से वैदिक नाम पदों एवं आख्यानों पर विचार विषय पर की है। आप दिल्ली वि.वि. के अन्तर्गत रामजस कालेज में संस्कृत विभाग प्रवक्ता एवं अध्यक्ष पद पर ३७ वर्ष तक सेवा करते रहे तथा वहां के छात्रावास के छात्राध्यक्ष के रूप में रहकर छात्रों में नैतिकता का भाव जागृत करते रहे।

आपने वर्ष १९७७ से २०१६ तक ३६ वर्षों में २५ पुस्तकों का प्रणयन किया है जो प्रामाणिक ग्रन्थ हैं और सभी प्रकाशित हैं। जिनमें ''काशिक का समालोचनात्मक अध्ययन'' उ०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत हो चुका है ''पतञ्जलि योगदर्शन एक अध्ययन'' संस्कृत संस्थान लखनऊ से पुरस्कृत हुआ है इसके अतिरिक्त ३. वेदों का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन'', ४. वैदिक दर्शन, ५. काशिका हिन्दी व्याख्या, ६. उपनिषदों में योग विद्या (दिल्ली–संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत है, ७. स्वामी विद्यानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, ८. क्या अथर्ववेद में जादू टोना है?, ९. काशिका ज्योतिष्मती व्याख्या, १०. वैदिक चिन्तन, ११. अथर्ववेद में क्या है? (उ०प्र० सं० अकादमी से पुरस्कृत), १२. ज्ञान का प्रादुभावि वेद, १३. यास्क का ऐतिहासिक पक्ष, १४. मन की अद्भुत शक्तियाँ स्वरूप, १५. वैदिक इतिहास विमर्श, १६. कठोपनिषद् भाष्य, १७. वैदिक शब्दार्थ विमर्श, १८. वैदिक निबन्ध, १९. ध्यान एवं उपासना, २०. कारिका प्रकाश, २१. वैदिक सूक्त संग्रह, २२. काशिका हिन्दी व्याख्या, २३. ऋषि दयानन्द का राष्ट्र को योगदान, २४. वेदों पर किए गए आक्षेपों का समाधान, २५. वैदिक साहित्य का इतिहास, २६. आयुष्काम यज्ञ कई छोटी–छोटी पुस्तकें तथा आर्य पत्र पत्रिकाओं में अभिनन्दन ग्रन्थों में आपके लेख पढ़ने को मिलते ही रहते हैं आपकी लेखनी धर्मवीर आर्य पं०लेखराम जी की सदैव चलती ही रहती है। आर्य समाज एवं गुरूकुलों के किसी भी सम्मेलन में आप जाते हैं वहां पर भी लेखन कार्य चलता ही रहता है यह हमारे जैसों के लिए प्रेरणा श्रोत का कार्य करेगा आपको सरकारों से संस्थानों से एवं आर्य समाजों की प्रतिनिधि सभाओं से समय–समय पर जो सम्मान मिले हैं वे भी हमारे लिए गौरव का विषय है संक्षेप से कुछ विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ–

१. पं० दीनानाथ शास्त्री पुरस्कार दिल्ली अकादमी १८९२।

२. पं० केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार–आर्य समाज पानीपत–१९८७

३. पं० युधिष्ठिर मीमांसाक पुरस्कार, रामलाल कपूर ट्रस्ट १९९७

४. महर्षि वेद व्यास पुरस्कार हरयाणा शोसायटी ब्र० बहालगढ़ आश्रम भिवानी।

५. संस्कृत समाराधक पुरस्कार संस्कृत अकादमी दिल्ली २००४

६. वेद वेदांग पुरस्कार आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई–२००५

७. उपनिषदों में योग विद्या पुरस्कार उ०प्र० से अकादमी २००५

८. काशिका व्याख्या पर पुरस्कार उ.प्र. सं. अकादमी लखनऊ १९८७

९. वेदभूषण पुरस्कार राव हरिश्चन्द्र ट्रस्ट नागपुर–२०१८

१०. वेदोपाध्याय पुरस्कार परोपकारिणी सभा अजमेर– २०१७

१०. पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार इलाहाबाद–२०११

१२. वैदिक विद्वान पुरस्कार स्वामी ओमनन्द स्मृति गु० झज्जर २०१९

शोधपत्र–गुरूकुल शोधभारती, संस्कृत मंजरी, वेदविद्या उज्जैन वेदवाणी, गुरूकुल पत्रिका, प्राच्य विद्यानुसन्धानम् आदि–आदि पत्रिकाओं में २५ शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के ८–९ मण्डलों का संस्कृत, हिन्दी अनुवाद किया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित'' वैदिक साहित्य का वृहद् इतिहास'' में लेखन कार्य किया है। संगोष्ठी एवं सम्मेलनों में जाकर आप अपने ज्ञान की ऊहा से विद्वत्समाज को प्रेरणा प्रदान कर मार्ग दर्शन करते रहते हैं कहीं अध्यक्ष तथा कही सारस्वत अतिथि वक्ता के रूप में शोभा बढ़ाते रहे है। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

१. विश्ववेद सम्मेलन गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार २००२–०५–०७ में

२. विश्वेद सम्मेलन महर्षि सन्दीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन २००७।

३. अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन पूना न्योग सम्मेलन लाडनू राज०१९९५

४. अखिल भारतीय प्राच्य संस्कृत सम्मेलन दिल्ली संस्कृत अकादमी १९९८–२००२

अखिल भारतीय प्राच्य वेद सम्मेलन लखनऊ, जयपुर–उदयपुर २०१२

६. राष्ट्रीय संगोष्ठी–दयानन्द पीठ पंजाब वि.वि. पंजाब २००५

७. राष्ट्रीय संगोष्ठी–जनता वैदिक कालेज बड़ौत २००६

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ १ का शेष

वर्तमान युग में वेदों का...

आये हैं न कि कर्म करने के लिए। इसीलिए पशुओं को भोगयोनि की श्रेणी में रखा जाता है। अतः परमेश्वर ने वेदों का ज्ञान प्राणीमात्र के लिए प्रदान किया है।

सृष्टि परमेश्वर ने चार सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को वेद का ज्ञान दिया। ऋग्वेद का ज्ञान अग्नि ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान वायु ऋषि को, सामवेद का ज्ञान आदित्य ऋषि को, अथर्ववेद का ज्ञान अंगिरा को प्रदान किया। इन्हीं ऋषिओं की परम्परा से वेदों का शुद्ध ज्ञान आज हम को प्राप्त हो रहा है। इन चारों वेदों में प्रत्येक विषय का ज्ञान है। पुनरपि मुख्य रूप से ज्ञान, कर्म और उपासना ये तीन वेदों के विषय हैं।

मता-पिता जिस प्रकार अपनी सन्तान को कार्य करने के लिए सुख, सुविधा के लिए उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं वैसे ही संसार के लोगों के लिए उस परमेश्वर ने आवश्यक वस्तु वेद को मानव समाज को दिया। इन वेदों में वो सम्पूर्ण सामग्री है जिसे पाकर मनुष्य सुख-शान्ति व समृद्धि को पाकर अत्यन्त परमधाम मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

जब हमारा जन्म होता है तब हमारी माता जी हमें बताती हैं कि अमुक व्यक्ति तुम्हारा भाई हैं, पिता हैं इत्यादि। जितना माता अपने बच्चों से प्यार करती है, उतना *और कोई कदापि नहीं कर सकता।*

वेदों को भी इसलिए वेदमाता प्रचोदयन्ताम्... मन्त्र से माता के नाम से सम्बोधित किया जाता है। क्योंकि वेदमाता परमपिता परमेश्वर के विषय में जितना बता सकती है, उतना और दूसरा कोई नहीं बता सकता इसलिए परमपिता परमेश्वर को अच्छी प्रकार से जानने के लिए वेद को जानना और मानना नितान्त अनिवार्य है। मानव समाज के लिए वेद की भूमिका में सबसे महत्वपूर्ण बात है आस्तिक बनना। जब व्यक्ति आस्तिक हो जायेगा तो समाज समाज अत्यधिक उन्नति करेगा। आस्तिकता के आते ही मनुष्य अनुशासित हो जाता है। अनुशासन के अन्तर्गत ही मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करने लगता है। आस्तिक होने का सीधा-साफ अर्थ है- परमेश्वर को सर्वव्यापक मानना। इसी से मनुष्य जब भी कोई कार्य करता है तब यही महसूस करता है कि उसे परमेश्वर देख रहा है। परन्तु वर्तमान समय में अनुशासन नहीं है, इसका कारण है कि हम आस्तिक नहीं है, वेद को नहीं मानते। (नास्तिको वेद निन्दकः)

इसी अनुशासन के अभाव में दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। इन सब समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए हमें वेद की शरण में जाना पड़ेगा। वेदों की महत्वपूर्ण भूमिका मनुष्य की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि -मेरा घर परिवार सुखी हो, समृद्धि से भरा हो, पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी मधुरभाषी हो। इन्हीं बातों को वेद में इसप्रकार व्यक्त किया गया है-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमर्ती वाचं वदतु शान्तिवान्।। (अथर्व — 3/3/2)

अर्थात् पुत्र पिता का अनुव्रती होवे अर्थात् पिता के व्रतों का पूर्ण करने वाला हो। पुत्र माता के साथ उत्तम मन वाला हो अर्थात् माता के मन को संतुष्ट करने वाला हो। पत्नी पति के साथ मधुर एवं शान्ति युक्त बोले।

आईये वेदों के स्वाध्याय से अपने जीवन को पवित्र बनायें अपने घरों में वेद का पठन-पाठन प्रारम्भ करें। इसी से हमारे जीवन का समाज का कल्याण होगा।

संस्कार ही मनुष्य के आचरण की नींव होते हैं : पूनम आर्य

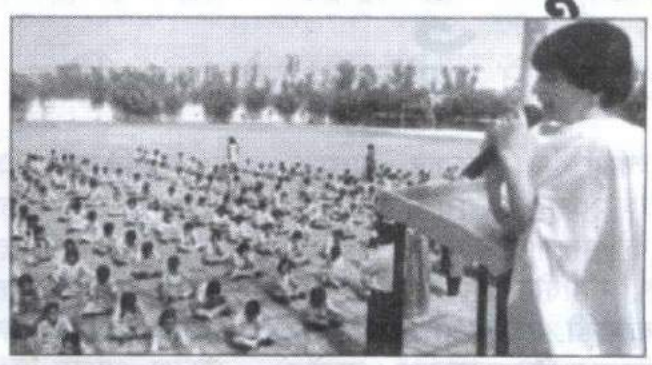

झज्जर। ईलाइट स्कूल मे विद्यार्थियों को संबोधित करते कुमारी पूनम आर्या।

■ कार्यक्रम का संचालन समिति अध्यक्ष पंडित रमेश चंद्र वैदिक ने किया

हरिभूमि न्यूज ▸▸ झज्जर

वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर द्वारा चलाए जा रहे बेटी बचाओ अभियान व्याख्यानमाला का 72वां कार्यक्रम ईलाइट इंटरनेशनल स्कूल ग्वालिसन रोड झज्जर में आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्या कमला चौधरी ने की। कार्यक्रम का संचालन समिति अध्यक्ष पंडित रमेश चंद्र वैदिक ने किया तथा कार्यक्रम की मुख्य वक्ता वैदिक विदुषियां कुमारी पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान व कुमार प्रवेश आर्या थी। कुमारी पूनम आर्य ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को बताया कि संस्कार ही मनुष्य के आचरण की नींव हो है, जिसके जैसे संस्कार होते है, वैसा ही उसका आचरण होता है। जो संस्कारित बच्चे होते है, वो धर्म पथ, सत्य पथ, सदचरित्रता, न्यायपथ व देश सेवा के पथ पर अडिग रहते है। उनका जीवन ओरों से अलग होता है और वो विद्यार्थी दूसरों के लिए आदर्श होते है। उपरोक्त संस्कार ऐसे गुण है जो कि विद्यार्थियों के जीवन मे महक पैदा करते है और ऐसे विद्यार्थी ना केवल शिक्षा मे आगे रहते है, बल्कि जीवन में समर्ग विकास भी करते

है और समाज का नेतृत्व करते है उनका जीवन अच्छे कार्यों के लिए समर्पित होता है। कार्यक्रम में एच.एस यादव रिटायर्ड प्राचार्य नेहरू कॉलेज, द्वारकादास प्रधान आर्य समाज झज्जर, जितेंद्र परमार बराणी आदि ने भी अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम में प्रतिभाशाली बेटियों को स्वामी दयानंद रचित महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश व चरित्र निर्माण संबंधित अन्य वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया। महेश कुमार मैनेजिंग डायरेक्टर, निखिल डांगी डायरेक्टर, निशा डांगी उप-प्राचार्य व अन्य स्कूल स्टॉफ व विद्यार्थी हाजिर रहे।

पृष्ठ ३ का शेष

आचार्य रघुवीर जी वेदालंकार

इतना विद्याविलासी प्रशासक भी हो सकता है यह मात्र एक कल्पना नहीं अपितु सत्यता है कि आपने अब तक तीन संस्थाओं की स्थापना ही नहीं की अपितु सुन्दर संचालन भी कर रहे हैं–

१. महर्षि दयानन्द इण्टर कालेज जडवड़–मु० नगर, उ.प्र.।

२. सरदार पटेल शिक्षण संस्थान तेज लहेड़ा मु० नगर (उ०प्र०)

३. वेद मन्दिर रोहिणी दिल्ली।

४. सम्प्रति–गुरूकुल तेजलहेड़ा में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर भावी पीढ़ी को विद्वान् बना रहे हैं।

५. केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के मन्त्री पद पर रहे।

६. आर्य समाज शालीमार बाग दिल्ली की स्थापना की तथा मन्त्री एवं प्रधान भी रहे। आपने १९६७ में गोरक्षा आन्दोलन में भी भाग लिया गुरूकुल कांगड़ी से जत्था लेकर आये और सार्वदेशिक सभा के मन्त्री रामगोपाल जी शालवालों के नेतृत्व में आन्दोलन किया १ मास तक गुड़गांव की जेल में रहकर गोरक्षा करने का संकल्प लिया ऐसे देश एवं गौ की रक्षा के लिए बाल्यकाल से ही आपके संस्कार सुरक्षित थे।

महात्मा सुखदेवानन्द ग्रा. टाली आश्रम बालेमहन्त आपके व्यवहार से अतीव प्रभावित रहे उन्होंने आपको गु० झज्जर पढ़ाने का पूरा खर्च प्रदान किया था आपके वैराग्यभाव को उन्होंने शिक्षा से जोड़कर सोने पर सुगन्धि का कार्य किया और आपके जीवन को सच्चा हीरा बना दिया। वही वैराग्य विवेक में परिवर्तित होकर वेदों के विद्वान् के रूप में समाज के लिए प्रभु का वरदान बन गए आपने आचार्य की परीक्षा में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से स्वर्ण पदक प्राप्त किया और गुरूकुल शिक्षा को गौरव प्रदान किया। आप बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी हैं समाज में विद्या, शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से भावी पीढ़ी के निर्माण का संकल्प लिया है योग साधना के सच्चे साधक एवं सरस्वती के सच्चे उपासक है वाणी में ओज–तेज का प्रभाव है व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् लेखक एवं एक अच्छे वैद्य भी हैं। आपने अपने जीवन का अनुभव बताया कि मेरी ट्रक से दुर्घटना हो गई और मैं मृतप्रायः पड़ा था लेकिन प्रभु कृपा से बच गया अस्पताल से आकर आयुष्काम मन्त्रों का जप एवं यज्ञ किया और मैं आज पूर्ण स्वस्थ हूँ यह साधना और ईश्वरीय विश्वास की बात है ऐसे तपस्वी विद्वान के विचारों से आत्म शक्ति प्राप्त होती है। गुरूकुल गौतम नगर कई वर्ष तक चारों वेदों के यज्ञ के ब्रह्मा रहे हैं गुरूकुल पौन्धा तथा अन्य गुरूकुल मंझावली के कार्यक्रमों में आपका आशीर्वाद लेने का मुझे सौभाग्य मिलता रहता है ऐसे योग्य सात्विक विद्वान् गुरू के शिष्य होने के का हमें गर्व है। आपको जनता ने विद्वानों ने संस्थाओं आपका सम्मान किया है। अब भारत सरकार के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति महोदय भी आपका सम्मन करने जा रहे हैं यह हम सभी आर्यों के ऐिल गुरूकुल परम्परा के लिए गौरव का विषय है मैं वन्दनीय पूजनीय गुरूवर आचार्य जी के चरण कमलों में विनीत भाव से नमन करता हुआ आपके आरोग्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूं जो लम्बे समय तक आपका आशीर्वाद हमें मिलता रहे। आर्य प्रतिनिधि उ०प्र० लखनऊ की ओर से भी आपका हार्दिक वन्दन अभिनन्दन करते हैं स्वीकार कर अनुग्रहीत करेंगें।

ऋषि दयानन्द का संकल्प

-आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

जब कोई व्यक्ति आर्यसमाज का सदस्य बनने लगता है तो उसे आर्य समाज के दस नियमों पर हस्ताक्षर करने होते हैं। आर्यसमाज का सदस्य बनने वाला व्यक्ति इन नियमों पर हस्ताक्षर करके इनमें कही गयी बातों को मानने और उनके अनुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करता है। इन नियमों में से प्रत्येक का इतना अधिक महत्त्व है कि यदि कोई व्यक्ति इनमें से किसी एक नियम को स्वीकार न करता हो, वह आर्यसमाज का सदस्य नहीं बन सकता। इनमें से तीसरा नियम यह है कि "वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" और प्रथम नियम यह है कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका मूल परमेश्वर है।' इन नियमों को स्वीकार करके आर्यसमाज का सदस्य एक तो यह स्वीकार करता है कि वेद मनुष्य–जीवनोपयोगी सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ है और इन सब सत्य विद्याओं का मूलकारण परमेश्वर है जिसने सृष्टि के आरम्भ में इन सत्यविद्याओं का उपदेश दिया था। दूसरे शब्दों में आर्यसमाज के सदस्य को एक तो यह स्वीकार करना होता है कि वेद परमेश्वर के द्वारा सृष्टि के आरम्भ में दिया गया ईश्वरीय ज्ञान है। दूसरी बात उसे यह स्वीकार करनी पड़ती है कि वह वेद को स्वयं पढ़ा करेगा तथा औरों को पढ़ाया करेगा, और यदि वह वेद को पढ़ नहीं सकता है तो वेद को जानने वालों से उसे सुना करेगा, तथा सुने हुए वेद को औरों को सुनाया करेगा। इस प्रकार आर्यसमाज को प्रत्येक सदस्य वेद को ईश्वर वाणी मानकर उसका प्रचारक, उसका मिशनरी बनने की प्रतिज्ञा करता है। और से अपना परम धर्म, सबसे ऊँचा कर्त्तव्य, मानता है।

२. ऋषि दयानन्द ने वेद से लेकर पञ्चतन्त्र तक के विशाल संस्कृत साहित्य का, जिसमें वेद और उसकी शाखाएं, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक एवं उपनिषदें, दर्शन शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, रामायण और महाभारत आदि इतिहास के ग्रन्थ, धर्म सूत्र पुराण–उपपुराण और स्मृतिग्रन्थ तथा तन्त्रग्रन्थ आदि के हजारों ग्रन्थ सम्मिलित हैं, गहरा और विस्तृत आलोड़न किया था। समग्र संस्कृत साहित्य का उनका अध्ययन इतना व्यापक था कि उन्होंने इस साहित्य में से तीन हजार ग्रन्थों को तो अपनी दृष्टि से *प्रामाणिक ग्रन्थों के रूप में छांटा था।* ऋषि ने अपने समय के बौद्ध, जैन, ईसाइयत और इस्लाम आदि सभी धर्मों के साहित्य का भी गंभीर अध्ययन किया था। उन्होंने विल्सन, ग्रिफिथ, मैकडानल और मैक्समूलर आदि पश्चिमी विद्वानों द्वारा लिखित वेदविषयक साहित्य का भी अनुशीलन किया था। इतने विराट गम्भीर अध्ययन के पश्चात् ऋषि इन परिणाम पर पहुंचे थे कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य की परमात्मा द्वारा दिया गया वह ज्ञान वेद के रूप में दिया गया था, और इस प्रकार वेद ही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ है। जिस प्रकार हमारी आंखों को देखने में सहायता देने के लिए परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही सूर्य का प्रकाश दे दिया था, हम आंखें खोलकर चलें और सूर्य के प्रकाश से सहायता लें तो हमें स्पष्ट पता लगता रहेगा कि गन्तव्य स्थान तक पहुंचने के लिए सीधा और साफ–सुथरा मार्ग कौन–सा है, इसी प्रकार परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही मन और बुद्धि की आंखों को सहयता देने के लिए वेदरूपी सूर्य के ज्ञान का प्रकाश भी हमें दे दिया था। हम विचारपूर्वक वेद का अध्ययन करें तो हमें पता लगता रहेगा कि मनुष्य–जीवन का उददेश्य क्या है और उस उद्देश्य तक पहुँचने के सही उपाय क्या है। मनुष्य सर्वांगपूर्ण उन्नति करके अपने जीवन को सब दृष्टियों से सुख का धाम कैसे बना सकता है इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण शिक्षाएं वेद में दी गई है। मनुष्य के व्यक्तिगत, कौटुम्बिक, समाजिक और राजनैतिक जीवन को आदर्श–जीवन बनाकर उसे अभ्युदय की चरम–सीमा तक ले जाने वाले और अन्त में निःश्रेयस का मार्ग दिखाकर उसे परमात्मा का साक्षात्कार करके ब्रह्मानन्द रस का पान करने के योग्य बनाने वाले निराले उपदेश वेद में दिये गये हैं। वेद से बढ़कर मान–जाति का समग्र कल्याण करने वाला दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है। यह तत्व ऋर्षि दयानन्द ने ऊपर संकेतिक विशाल साहित्य का आलोड़न, मनन और चिंतन करके प्राप्त कर लिया था।

३– मानव–जाति के कल्याण के लिए वेद की इस माहन् उपयोगिता की हृदयंगम करके ऋषि ने अपनी समग्र शक्ति और सारा जीवन–वेद के प्रचार में अर्पित कर दिया था। धरती के प्रत्येक देश में, प्रत्येक देश के प्रत्येक नगर में, प्रत्येक नगर प्रत्येक गली में, और प्रत्येक गली के प्रत्येक घर में वेद के सन्देश को ऋषि दयानन्द पहुंचाना चाहते थे। इस कार्य का आरम्भ स्वभावतः पहले तो भारत में से ही होना था। ऋषि ने इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए वेदभाष्य सहित दर्जनों ग्रन्थ लिखें, हजारों व्याख्यान दिए, सैकड़ों शास्त्रार्थ किये और अन्य अनेक उपाय भी किये। यह कार्य करते हुए ही उन्होंने अपने प्राणों का विसर्जन किया। उनके पीछे भी उनका वेद के प्रचार का यह महान् कार्य चलता रहे इसके लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। और आर्यसमाजों तथा आर्यसमाजियों को उनके कर्त्तव्य का बोध कराते रहने के लिए उन्होंने आर्यसमाज के दस नियमों का निर्माण किया। इन नियमों में वस्तुतः प्रधानता तो वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने और उसका प्रचार करने विषयक दो नियमों की है। शेष आठ नियम एक–प्रकार का ज्ञान–विज्ञान भरा हुआ है। यह मान्यता केवल ऋषि दयानन्द की ही नहीं है। भारतीय आर्यों के व्यास, पतंजलि, गोतम, कणाद, कपिल, जैमिनि और शंकर आदि सभी ऋषि–मुनियों और आचार्यों की वेद के सम्बन्ध में यही मान्यता है। आर्यों के ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन, उपनिषदें, रामायण, महाभारत, पुराण और आयुर्वेद आदि के ग्रन्थ वेद के सम्बन्ध में इसी प्रकार के विचारों से ओतप्रोत हैं। स्थानाभाव के कारण इस लघु लेख में इस विस्तृत साहित्य के उद्धरण दे सकना सम्भव नहीं है। काल–क्रम में एक लम्बे अरसे से वेदों का पठन–पाठन विलुप्त हो गया था। वेद विषयक अन्य ग्रन्थों का पठन–पाठन भी नहीं के बराबर ही रह गया था। लोग वेदों का नाम तक भी भूल गये थे। वेद के सम्बन्ध में घोर अज्ञान जनता में छा गया था। ऋषि ने विलुप्त से हो गये वेद के पुनरूद्धार और पुनः प्रचार का कार्य इस युग में किया और वेदविषयक प्राचीन ऋषि–मुनियों की मान्यताओं को फिर से दोहराया।

५. वेद प्रभु की वाणी है और वे मानवमात्र के लिए कल्याणकारी उपदेशों और ज्ञानविज्ञानों से भरे हुए है और इसलिए ऋषि दयानन्द और प्राचीन ऋषि–मुनियों की अपनी कपोल कल्पनामात्र नहीं है। वेद के द्वारा जगन्न्यिन्ता परमात्मा ने स्वयं यह बात कही है और वेद की इस वाणी का निरन्तर प्रचार करते रहने का आदेश मनुष्यों को दिया है। इस सम्बन्ध में वेद से अनेक उद्धरण दिये जा सकते है। यहां दो–एक स्थलों का निर्देश कर देना ही पर्याप्त होगा। यजु० २६/२ मंत्र में भगवान् कहते है कि 'हे मनुष्यों यह वेदवाणी सबका कल्याण करने वाली है मैंने इस कल्याणकारी वाणी का सब मनुष्यों के लिए उपदेश किया है, मैंने इसका उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबके लिए किया है, जिसे तुम अपना सकते हो उसके लिए भी इसका उपदेश किया है और जिसे तुम पराया समझते हो उउसके लिए भी इसका उपदेश किया है।'

इसी भांति अथर्व. १९/७१/१ मंत्र में प्रभु कहते हैं कि 'हे मनुष्यों माताकी भांति सब कामनाओं को पूरा करने वाली यह वेद वाणी मैंने तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दी है, यह तुम्हें उद्यमशील बना देगी, *शिक्षित करके द्विज बना* देगी, तुम्हारे हृदयों को पवित्र कर देगी, उसके स्वाध्याय और तदनुकूल आचरण से तुम्हें लम्बी आयु प्राप्त होगी, बलिष्ठ प्राणशक्ति प्राप्त होगी, उत्तर सन्तान प्राप्त होगी, गौ आदि पशु प्राप्त होंगे, कीर्ति प्राप्त होगी, धन सम्पत्ति प्राप्त प्राप्त होगी, ब्रह्म तेज प्राप्त होगा और अन्त में ब्रह्म का दर्शन और मोक्ष प्राप्त होगा। 'इतने कल्याण और मंगल देने वाली बताते हैं परमेश्वर वेदरूपी माता को! ऊपर उद्धृत यजु. २६/२ मंत्र की शब्द–रचना से यह ध्वनि भी निकलती है कि जिस प्रकार मैं परमात्मा इस वेद वाणी को सब मनुष्यों के हितार्थ दे रहा हूँ उसी प्रकार इसके पाठक हे मेरे अमृत पुत्रों तुम भी आगे– आगे निरन्तर इसका प्रचार करते रहना। यजु. ७/१४ मंत्र में तो इस बात को बहुत ही अधिक स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया है। वेद का स्वाध्यायी पाठक अपने प्रभु से इस मन्त्र में कहता है कि 'सब प्रकार के ऐश्वर्य और शांति के निधि सबके वरण करने योग्य और सबको पाप से बचाने वाले, सबको गर्मी और प्रकाश देकर उन्नति के पथ पर ले जाने वाले तथा सब का हित चाहने वाले हमारे मित्र हे प्रभो आपने सब प्रकार के वीर्य और पराक्रम को देने वाली सब प्रकार के ऐश्वर्य और पुष्टि को देने वाली और इसलिए सबके स्वीकार करने योग्य जो यह वैदिक संस्कृति सृष्टि के आरम्भ में दी थी उसको अच्छिन्न और निर्बाध रूप में औरों को देने वाले हम बन सकें ऐसी शक्ति हमें प्रदान कीजिये।' वेद–अध्येताओं के मुख से यह आदेश दिया है कि वेद के अनुयायियों को उसका प्रचार अविच्छिन्न और निर्बाध रूप से करते रहना चाहिये जिससे मानव–मात्र का कल्याण होता रहे।

महर्षि दयानन्द के स्त्री शिक्षा विषयक विचार

-डॉ. (श्रीमती) इन्दु शर्मा

हमारी संस्कृति के अनुसार इस सृष्टि की उत्पति, स्थिति और प्रलय के मूल में जो महाशक्तियां विद्यमान हैं उन्हें पुरुष और प्रकृति के नाम से जाना जाता है। वेदान्तवादियों के अनुसार उन्हें शिव और शक्ति के नाम से अभिहित किया है। पुरुष और नारी इन्हीं दोनों शक्तियों का व्यष्टि रूप माने जाते हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में ईश्वर की कल्पना अर्धनारीश्वर के रूप में की गई है। जब तक पुरुष स्त्री को सच्चे अर्थों में मनसा, वाचा, कर्मणा अपनी अर्धांगिनी स्वीकार नहीं करता तब तक वह पुरुष की संज्ञा का पात्र नहीं हो सकता। हमारी परम्परा के अनुसार यह जैसे पुनीत कार्यों में भी पति और पत्नी दोनों की उपस्थिति अपेक्षित है परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करने वाले कुछ स्वार्थी तत्वों ने नारियों को वेदमन्त्रों के अध्ययन तक के अधिकार से वंचित करने का दुस्साहस किया। वे यह भूल गए कि ऋषिकाओं द्वारा आत्मसात् की जाने वाली ऋचओं के अध्ययन के बिना वेद का पूर्ण ज्ञान असंभव है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वैदिक काल में नारियों को मात्र वेदाध्ययन का ही अधिकार नहीं था अपितु वे मन्त्रदष्ट्री बनने की भी अधिकारिणी थीं। यही युग था जब जीवन के हर श्रेत्र में पुरुष और नारी की सहभागिता और सहकारिता का ससारंम्भ हुआ।

स्वामी दयानन्द के नारी– शिक्षा विषयक विचार पूर्णरूपेण तत्सम्बन्धी वैदिक मान्यताओं से प्रेरित ही नहीं अपितु निःसृत भी हैं। पूना प्रवचनमाला के तृतीय प्रवचन में स्त्रीशिक्षा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने वर्तमान समाज से आग्रह किया है कि यदि वे सच्चे अर्थों में वैदिक काल में स्त्रीशिक्षा को प्राप्त महत्व से परिचित होना चाहिते हैं तो उन्हें आर्य लोगों के इतिहास की ओर देखना चाहिए, जिसमें स्त्रियों के आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का उल्लेख मिलता है। उनके उपनयन और गुरू–गृह में वास के संस्कारों की चर्चा उपलब्ध होती है। इस सत्य की सिद्धि के लिए उन्होंने गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि विदुषियों का उदाहरण दिया है जो बड़े–बड़े ऋषियों एवं मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थीं। इसके अतिरिक्त ऐसी अन्य बहुत सी ऋषिकाएं हैं जो मन्त्रों को आत्मसात् करने में सफल रहीं। वस्तुतः स्वामी दयानन्द ने स्त्रीशिक्षा की आवश्यकता का जो महत्त्व सिद्ध किया है वह सर्वथा वेदसम्मत है।

स्वामी जी से पहले स्त्रीशिक्षा का प्रचार लगभग लुप्तप्रात हो गया था। 'स्त्रीशूदौ नाधीयातामिति श्रुतेः' की भ्रान्ति लगभग प्रचलित हो चुकी थी, स्वामी जी इसके पक्षधर नहीं थे। उन्होंने इसका विरोध करते हुए कहा था कि शिक्षा मनुष्यमात्र का अधिकार है। जो लोग स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हैं वे सर्वथा मूर्ख, स्वार्थी और निर्बुद्धि हैं। स्वामी जी ने बालक और बालिकाओं की शादी शिक्षा की अनिवार्यता और उन्हें शिक्षा से वंचित रखने के लिए उनके माता–पिता की दण्डनीयता का समर्थन करते हुए लिखा है– ''इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवे और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर पर न रखे। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वे दण्डनीय हों।'' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि राजा को ऐसा यत्न करना चाहिए जिससे सब बालक और बालिकाएं ब्रह्मचर्यपूर्वक रहते हुए विद्यायुक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हों, तथा सत्य, न्याय और धर्म का निरन्तर सेवन करें। इस कथन में विद्या शब्द का उल्लेख मिलता है। विद्या को केवल उस शिक्षा का पर्याय नहीं कहा जा सकता। जो मात्र अक्षरबोध, लिपिबोध और गणितबोध तक ही सीमित हो। विद्या से तात्पर्य है, शिक्षा और संस्कार दोनों का समन्वय। भारतीय शिक्षा–पद्धति के मूल में यही अवधारणा है, क्योंकि यहां केवल अक्षरबोध, लिपिबोध और गणित तक ही सीमित हो। विद्या से तात्पर्य है शिक्षा और संस्कार दोनों का समन्वय। भारतीय शिक्षा–पद्धति के मूल में यही अवधारणा है, क्योंकि यहां केवल अक्षरबोध, लिपिबोध और गणित बोध को अविद्या कहा गया है और आत्मोत्थान विषयक ज्ञान को विद्या माना गया है। तदनुसार मानव का पूर्णत्व विद्या और अविद्या के समन्वय में दर्शाया गया है। आज की शिक्षा का उद्देश्य केवल जीवनोपयोगी साधनों के उपार्जन में सहायक ज्ञान तक सीमित रह गया है। शिक्षक हो अथवा शिक्षार्थी दोनों का शिक्षा विषयक उद्देश्य एक है, और वह है–भौतिक सुख–समृद्धि में आसक्ति और उसकी प्राप्ति। इसी के दुष्परिणामों को देखते हुए नैतिक शिक्षा की अपेक्षा बल पकड़ती जा रही है। समस्त आर्यसमाजी गुरुकुलों और पाठशालाओं में इसका प्रावधान भी किया गया है, परन्तु विश्विद्यालयीय स्तर पर जब तक इसे एक अनिवार्य विषय का स्थान प्राप्त नहीं होता तब तक स्वामी दयानन्द का स्त्री शिक्षाविषयक आदर्श कार्यान्वित नहीं हो सकता। इसी सत्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने ऋग्वेद का उद्धरण देते हुए कहा है– ''जितनी कुमारी हैं वे विदुषियों से विद्याध्ययन करें और वे ब्रह्मचारिणी कुमारी उन विदुषियों से ऐसी प्रार्थना करें कि आप हम सबको विद्या और सुशिक्षा से युक्त करें।''

यह तो सर्वथा स्पष्ट है कि शिक्षा से स्वामी जी का अभिप्राय इसे केवल अक्षरबोध, लिपिबोध, गणितबोध और अन्य विज्ञान तथा वाणिज्य की शाखाओं के बोध तक सीमित रखना नहीं है। वे शिक्षा को चरित्र–निर्माण का आधार मानते थे। उनका मत था कि यदि माता–पिता अपने पुत्र तथा पुत्रियों को अच्छी शिक्षा देकर, तत्पश्चात विद्वान् और विदुषियों के समीप बहुत काल तक रहकर पढ़ावें तब वे कन्या और पुत्र सूर्य के समान अपने कुल और देश के प्रकाश हों।'' सुशिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है–जैसे माताएं सन्तानों को दूध आदि देकर बढ़ाती है वैसे ही विदुषी स्त्रियां और विद्वान् पुरुष कुमारियों और कुमारों को विद्या और अच्छी शिक्षा देकर बजाये उन्होंने विद्या और शिक्षा को मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक विकास का आधार स्वीकार किया है। दूसरे शब्दों में स्वामी दयानन्द उस वैदिक मान्यता के समर्थक हैं जिसके अनुसार विद्या और अविद्या का समन्वय पूर्णत्व प्राप्ति का साधन हो सकता है। स्वामी दयानन्द शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का स्त्रोत मानते थे। ब्रह्मचर्य जीवन पर पुनः–पुनः दिया गया बल उनके इस विश्वास को स्यं स्पष्ट कर देता है कि शिक्षा वह साधन है जिसका उपार्जन समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है। जब तक स्त्रियाँ इस क्षेत्र में पुरुष से कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में समर्थ नहीं हो जाती तब तक समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं। शिक्षा की अनिवार्यता के साथ–साथ उन्होंने इस क्षेत्र में गुरु और गुरुपत्नी के दायित्वों की भी चर्चा की है। उनके अनुसार गुरु और गुरुपत्नी को चाहिए कि वे वेद और उपवेद तथा वेद के अंग और उपांगों की शिक्षा से देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण और मन की शुद्धि, शरीर की पुष्टि तथा प्राण की सन्तुष्टि देकर समस्त कुमार और कुमारियों को अच्छे गुणों में प्रवृत्त करावें।

वस्तुतः स्वामी जी दैहिक, इन्द्रियिक, मानसिक और प्राणविषक विकास को शिक्षा का अंग मानते थे और गुरु तथा गुरुपत्नी को इनके उपार्जन का स्रोत। उन्होंने स्त्रीशिक्षा के विरोधियों को निरुत्तर करने के लिए 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्' उद्धरण का आश्रय लिया है। शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट तथा उल्लेख मिलता है कि जहां पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी होगी अथवा स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् रहेगा तो घर में नित्यप्रति देवासुर संग्राम मचा रहना स्वाभाविक है। उसके अनुसार पुरुषों की भांति स्त्रियों के लिए व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प–विद्या का ज्ञान अनिवार्य है, क्योंकि इसके बिना सत्य–असत्य का निर्णय, अनुकूल व्यवहार, तथा योग्य सन्तानोत्पति, उसका पालन, वर्धन और सुशिक्षा सम्भव नहीं। इन शाखाओं के अध्ययन के साथ–साथ स्त्रियों के लिए पाकविधि सीखने का भी आग्रह किया गया है। उन्होंने परामर्श दिया है कि शिक्षा के लिए लड़कों को पुरुषों की और लड़कियों को स्त्रियों की पाठशाला में जाकर ब्रह्मचर्य की विधिपूर्वक सुशीलता से विद्या और भोजन बनाने की क्रिया सीखनी चाहिए।

स्वामी जी के शिक्षा–सम्बन्धी विचार भारतीय संस्कृति के सर्वथा अनुरूप हैं। तदनुसार ही उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद की शिक्षा को सर्वोपरि प्राथकिता देने का आग्रह किया है। इस बात पर भी बल दिया है कि कन्याओं की शिक्षा भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि बालकों की। वे विदेशी भाषाओं की शिक्षा के विरुद्ध नहीं हैं, परन्तु यह मानते हैं कि वे भाषाएं अपनी भाषा के साथ सहायक रूप में सीखी जाएं।

उसके अनुसार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ध्येय विभिन्न विद्याओं और अविद्याओं में निपुणता प्राप्त करने के साथ–साथ चरित्र–निर्माण की दिशा में छात्रों में छात्रों का उचित मार्ग–दर्शन करना भी है। यही कारण था कि विदेशी शासकों की वक्रदृष्टि होते हुए भी गुरूकुल शिक्षा संचालकों ने अपनी शिक्षा नीति में विदेशी शासन का हस्तक्षेप कभी स्वीकार नहीं किया और अपने परिश्रम और जनसामान्य के सहयोग से, बिना किसी शासकीय आर्थिक अनुदान के इन संस्थाओं को प्रगतिपथ पर अग्रसर किया। स्वामी दयानन्द के द्वारा स्त्री–शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए किए गए उपादेय योगदान के फलस्वरूप आज सरकार ने छात्राओं के लिए स्नातक स्तर तक की शिक्षा निःशुल्क कर दी है। आज माता–पिता अपनी पुत्रियों को शिक्षा दिलाने के लिए उतने ही उत्सुक हैं जितने कि पुत्रों को। यह उन्हीं के द्वारा प्रचारित नारी शिक्षा और नारी–स्वातन्त्रय की विचारधारा का परिणाम है कि आज भारतीय ललनाएं केवल वायुसेना के प्रतिष्ठित पदों पर ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष तक ही सफल यात्रा करने में सफल हो रही हैं। वे हिमालय के उच्चतम शिखर पर सफल अभियान करने में विश्व में अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुकी हैं।

वस्तुतः शिक्षा हमें मानव संस्कृति के आधारभूत शाश्वत संस्कारों से युक्त करती है। भारतीय नारी केवल अपने अधिकारों केक लिए ही प्रबुद्ध नहीं है। स्वामी जी ने स्त्रियों को अध्यापिकाओं के पद पर नियुक्त करने का परामर्श देते हुए कहा था कि कन्याओं के विद्यालयों में केवल स्त्री अध्यापिकाओं की नियुक्ति की जाए। उनके अपने शब्दों में ''सब विद्वान् जन अपनी–अपनी विदुषी स्त्री के प्रति ऐसा उपदेशक दें कि तुम्हें सबकी कन्याओं

शेष पृष्ठ ७ पर

काशी शास्त्रार्थ सम्मेलन

दिनांक 11, 12 एवं 13 अक्टूबर 2019 से

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिनांक ११, १२ एवं १३ अक्टूबर २०१६ को वाराणसी में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के रूप में वृहद अयोजन है आप अभी से आने का संकल्प कर लें तथा प्रदेश की आर्य समाजें इन तिथियों में कोई भी कार्यक्रम न रक्खें आप सभी महानुभाव से निवेदन है कि अपने ईष्ट मित्रों सहित महासम्मेलन में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनायें।

पृष्ठ ६ का शेष

महर्षि दयानन्द के स्त्री शिक्षा...

को पढ़ाना चाहिए और सब स्त्रियों को सुशिक्षित करना चाहिए। इस उद्धरण में स्त्रियों को सुशिक्षित करने वाली बात यह सिद्ध करती है कि स्वामी दयानन्द प्रौढ़ स्त्री–शिक्षा के भी पक्षधर थे। उन्होंने विदुषी स्त्रियों को कुमारी कन्याओं की विद्या, सुशिक्षा और सौभाग्य में वृद्धि के लिए उतना ही लाभकारी माना है जितना कि जागते हुए मनुष्यों के लिए प्रभातवेला गुणकारी होती है। उनके अनुसार विदुषी अध्यापिका को भूमि के तुल्य क्षमाशील, लक्ष्मी के तुल्य शोभायमान् जल के तुल्य शान्त और सहेली के तुल्य उपकारक होना चाहिए।''

अध्यापन कार्य उनके गृहस्थकर्त्तव्य सम्पादन में बाधक न हो इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने लिखा है कि श्रेष्ठ स्त्रियों को उचित है कि वे अच्छी शिक्षित दासियों को रखें, जिससे सब पाक आदि की क्रिया और सेवा समय पर हो सके। परिचारिका का गुणोल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है कि यह प्रीतियुक्त, सुकेशिनी, सुन्दर श्रेष्ठ कर्म करने वाली और पाकविद्या में निपुण होनी चाहिए।

निष्कर्षतः स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में स्त्रीशिक्षाविषयक जो विचार अभिव्यक्त किए हैं वे वैदिक संहिताओं में प्रतिपादित स्त्रीशिक्षाविषयक धारणाओं का अनुमोदन करते हैं और उनकी सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रासंगिता की सिद्धि में सर्वथा सहायक सिद्ध होते हैं। वास्तव में हमारे देश में स्त्रीशिक्षा का ह्रास यवन आक्रमण काल में ही प्रारम्भ हुआ था। और दासता के उत्तरोत्तर कसते हुए शिंकंजे ने हमारे पुरूष समाज को स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन होने के लिए विवश कर दिया था दासता मनुष्य की मानसिकता के लिए उतनी ही हानिकारक है जितना कि पूर्णिमा के चन्द्रमा के लिए ग्रहण। स्वतन्त्रता से जिस राष्ट्रीयता की भावना का जागरण वांछित था, स्वतंत्रता आन्दोलन की सफलता के लिए नारियों द्वारा जो योगदान अपेक्षित था, वह तभी सम्भव हो पाया जब स्वामी दयानन्द ने अपने स्त्री शिक्षा समर्थक विचारों को कार्यान्वित करने के लिए उद्‌बुद्ध भारतीय नागरिकों को आर्य कन्या पाठशालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना करने की प्रेरणा देकर नारी को देश के प्रति अपने दायित्यों के निर्वाह के लिए सामर्थ्य प्रदान करने का अवसर दिया। इस क्षेत्र में उनका योगदान सदा–सर्वदा स्मरणी रहेगा। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों, पाठशालाओं, विद्यालयों और महाविद्यालयों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या इस तथ्य को स्वयं सिद्धि करती जान पड़ती है। उनके स्त्री शिक्षा विषयक विचार हमें उनके राष्ट्रप्रेम, स्त्रीकल्याण के प्रति उत्साह, और समाज कल्याण विषयक अदम्य प्रवृत्ति से परिचित कराने में सर्वथा समर्थ हैं।

बालिका आत्म–रक्षा शिविर

चौधरी मंगत सिंह यज्ञशाला दाहा (बागपत) में केन्द्रीय आर्य समिति चौगामा (बागपत) के सौजन्य से एवं आर्य प्रतिनिधि सभा (बागपत) की सहमति से आर्य समाज दाहा (बागपत) द्वारा २२ मई २०१६ से २६ मई २०१६ तक बालिकाओं के लिए विशाल ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें बालिकाओं की सर्वांगीण उन्नति हेतु योगासन, प्राणायाम, जूड़ो-कराटे, लाठी, भाला, तलवार बाजी, मल्लखम्ब का प्रशिक्षण दिया जायेगा संध्या, यज्ञ नैतिक शिक्षा, ब्रह्मचर्य, विश्वबन्धुत्व, परस्पर सहयोग, राष्ट्र-भक्ति आदि सद्‌गुणों का पाठ भी पढ़ाया जायेगा ताकि वे अन्धविश्वास, पाखण्ड, अनुशासनहीनता के दुर्गुणों से स्वयं को बचा सकें। इच्छुक छत्राएँ, बिना किसी साम्प्रदायिक एवं जातीय भेदभाव के अपने अभिभावकों की स्वीकृति लेकर १८ मई २०१६ से पूर्व प्रवेश हेतु प्रार्थना पत्र दे सकती हैं। इस शिविरि की मुख्य संचालिका प्राचार्या सुमेधा जी, चोटीपुरा गुरूकुल होगीं।

– विजय राठी, मो०: ८७५५१०४५३२

परोपकार का महत्व

एक प्रदेश में एक राजा राज्य करता था। उस राजा का एक पुत्र था, जिसे आने वाले समय में राजा का उत्तराधिकारी बनना था। जब शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजकुमार के सभी मित्र प्रजाजनों के ही बच्चे थे। प्रायः बच्चों में गरीब–अमीर का भेदभाव नहीं होता। राजकुमार अपने मित्रों से बहुत प्रेम करता था।

एक बच्चे ने एक दिन राजकुमार से कहा, '' आप तो राजगद्‌दी के मालिक हो। अब तुम हमसे इतना प्रेम करते हो, लेकिन राजा बनने पर हमें भूल जाओगे। बड़े होने पर यदि तुम मित्रता निभाओगे, तब हम समझेंगे कि तुम हमें प्यार करते हो।''

धीरे–धीरे राजकुमार बड़ा हो गया। वह राजगद्‌दी का मालिक बन गया और जब उसने राज्य का कार्यभार अच्छी तरह से सँभाल लिया, तब राजकुमार ने अपने उसी मित्र को बुलाकर कहा, ''तुमने एक दिन कहा था कि राजा होने पर यदि तुम मित्रता निभाओं तो जानें। आज मित्रता निभाने आ गया है। मैं तुम्हें तीन दिन के लिए इस राज्य का राजा बनाता हूँ। इस राजगद्‌दी पर बैठकर राज्य करो।''

राजकुमार का वह मित्र घबराकर बोला, ''अन्नदाता! वे सब तो बचपन की बातें थीं। मुझे यह राज्य नहीं चाहिए।'' लेकिन राजा की आज्ञा टालने की उसमें हिम्मत नहीं थी, इसीलिए उसने तीन दिन के लिए राजपाठ स्वीकार कर लिया। पहला दिन तो उसने खाने–पीने में ही बिता दिया। रात को राजकुमार से बोला, पूरे राज्य के साथ तो रानी भी मेरी है। इसीलिए मैं राजमहल में ही सोऊँगा।''

राजा बने उस मित्र की बात सुनकर वह पतिव्रता स्त्री घबरा गई और कुलगुरू देवता के पास जाकर बोली कि अब मैं क्या करूँ? रानी को चिंतित देखकर कुलगुरू ने कहा, ''रानी! तुम चिन्ता मत करो, हम सब कुछ ठीक कर देंगे।''

इसके बाद कुलगुरू ने राजा बने मित्र से कहा कि यदि आपका राज महल में सोने की इच्छा है तो तुम्हें राजा की तरह ही जाना होगा। कुलगुरू ने नौकर से कहा कि महाराज का महल में जाने के लिए श्रंगार करो और वेशभूषा ठीक से तैयार करके पहना दो। नाई से कह दिया गया कि महाराज के बाल ठीक से कटने चाहिए। बाल काटने, इत्र लगाने में ही पूरी रात बीत गयी। तीन दिन इसी तरह बीत गए, लेकिन महाराज का श्रृंगार पूरा नहीं हुआ। आखिर राजकुमार ने अपना राज्य वापस ले लिया।

राजकुमार ने दूसरे दिन अपने एक अन्य मित्र को बुलाया और तीन दिन के लिए उसे अपना राज्य दे दिया। मंत्री ने राज बने मित्र से कहा, ''घर, महल, सारी फौज, खजाना, इस राज्य की प्रत्येक वस्तु पर तुम्हारा ही अधिकार है।'' उसने शीघ्र ही उच्च अधिकारियों को आज्ञा दी कि हमारे राज्य में किस चीज की कमी है, पता लगाओ। बिजली, पानी, धर्मशाला, पाठशाला, चिकित्सालय की व्यवसा जिस गांव में नहीं है, वह तीन दिन में पूरी हो जानी चाहिए। जितना रूपया पैसा चाहिए, खजाने से ले लो।

राजा की आज्ञा से प्रत्येक गांव में पाठशाला धर्मशाला, अस्पताल बनाने का काम पूरे जोश के साथ शुरू हो गया। तीन दिन के अंदर राज्य के गांवों में किसी चीज की कमी नहीं रही। सभी सुख–सुविधाओं की व्यवस्था कर दी गई। तीन दिन पूरे होने पर उस मित्र ने राजसिंहासन राजकुमार को लौटा दिया।

राजकुमार ने खुश होकर अपने मित्र को मंत्री बनाकर अपने पास रख लिया। राजकुमार ने मित्र से कहा, ''हमें तो राज्य विरासत में मिल गया लेकिन हमें राज्य का काम करना नहीं आया। हमने प्रजा का इतना ध्यान नहीं रखा, जितना आपने तीन दिन में रखा। हम अच्छे राजा तो न बन सके, लेकिन अच्छे मित्र अवश्य बनेंगे।''

दूसरों की सेवा करने में ही सुख है। यह मनुष्य जीवन बड़ी मुश्किल से मिलता है। इसे परोपकार में लगाना चाहिए। दूसरों की सुख–सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए। परोपकारी व्यक्ति से भगवान भी खुश रहते हैं, उसे किसी चीज की कमी नहीं रहती।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ९३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा
.....
.....

वैदिक परिवार की बेटी अंकिता कटियार को अमेरिका में मिला अवार्ड

कानपुर-यूनिवर्सिटी ऑफ कैन्सॉस, लारेंस, अमेरिका के रसायन शास्त्र विभाग द्वारा भारतीय शोध छात्रा अंकिता कटियार को कैमिस्ट्री विषय में श्रेष्ठ अध्ययन के लिए "रेनॉल्ड टी० ल्वोमोटो रिसर्च स्कॉलरशिप अवार्ड-२०१९ प्रदान किया गया है। सम्मान समारोह में विख्यात रसायन वैज्ञानिक प्रो० वार्ड एच० थाम्पसन ने अंकिता को जेहॉक प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं एक लाख ग्यारह हजार रूपये की धनराशि प्रदान करते हुए उसे वर्ष का उत्कृष्ट शोधार्थी घोषित किया। गत वर्ष भी उसे "कार्नेलियस मैक्कुलम रिसर्च अवार्ड-२०१८ प्रदान किया गया था। अंकिता ने वर्ष २०१६ में इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजूकेशन एण्ड रिसर्च, भोपाल से बीएस-एमएस (ड्यूल डिग्री) हासिल की थी।

उसी वर्ष उसने आईआईटी-गेट, सीएसआईआर-नेट, जीआरई तथा टॉफंल परीक्षायें अच्छी रैंक से उत्तीर्ण की थीं। जिसके फलस्वरूप उसे अमेरिका में शोध का प्रस्ताव तथा एक लाख बीस हजार अमेरिकी डॉलर की सहायता के साथ पूर्ण स्कॉलरशिप भी मिली थी। उसने अपने तीन वर्ष के शोध कार्य में लगातार दो बार अवार्ड प्राप्त कर सात समुंदर पार जाकर भारत का नाम रोशन किया है।

वैदिक परिवार की बेटी अंकिता कानपुर महानगर के साकेत नगर निवासी प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ० अनिल कटियार की पुत्री है। डॉ० कटियार ने बताया कि अंकिता शुरू से ही अति मेधावी रही है। विश्वस्तरीय वैज्ञानिक बनकर अपने देश की सेवा करना उसका प्रमुख सपना रहा है। जो अब पूरा हो रहा है। उसकी निरंतर सफलता से गदगद् उसके परिवार के सदस्यों का कहना है कि अंकिता ने महिला शिक्षा के प्रति देश के लोगों को अपना नजरिया बदलने का संदेश दिया है। अंकिता की प्रारम्भिक शिक्षा शहर के डॉ० वीरेन्द्र स्वरूप एजूकेशन सेन्टर से पूरी हुई थी। अंकिता के शुभचिंतक उससे भविष्य में देश और दुनिया के लिए लाभकारी सर्वोत्तम शोध कार्य करने की उम्मीद करते हैं।

शौकिया तौर पर अंकिता को पुस्तकों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों से बड़ा लगाव है। वर्ष २००५ में एक सांस्कृति प्रतियोगिता में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के प्रचार निदेशालय ने उन्हें अवार्ड प्रदान किया था। अंकिता के पिता डॉ० अनिल कटियार पूर्व में आर्य समाज वेद मंदिर, गोविन्द नगर, कानपुर के प्रधान भी रह चुके हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। -स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती (मंत्री) आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

युवा निर्माण

युवको का होता जहां चरित्र निर्माण आर्य वीर दल है उसका नाम

आर्य वीर दल जिला सहारनपुर के तत्वाधान में आयोजित
आर्य समाज बढेडी, नागल, जिला- सहारनपुर (उ0 प्र0) के द्वारा

आर्यवीर दल युवा चरित्र निर्माण
योग-व्यायाम व आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक सोमवार 03 जून से सोमवार 10 जून 2019 तक

ओ३म्

महर्षि दयानन्द गुरूकुल पूठ महाविद्यालय गढ़मुक्तेश्वर, हापुड

उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ

गढ़मुक्तेश्वर गंगा किनारे प्राचीन तीर्थ गुरूद्रोणाचार्य की तपस्थली गुरूकुल पूठ में नवीन सत्र के प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। शान्त एकान्त वातावरण में न्यूनतम कक्षा ५ उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश होगा ६, ७ एवं ८ उत्तीर्ण भी प्रवेश होगें प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही मान्य होगा शीघ्रता करें उ०प्र० मा०सं०शि० परिषद् लखनऊ से मान्यता है शिक्षा आर्य वीर दल का प्रशिक्षण भी होता है। शिक्षा नि:शुल्क है मात्र छात्रावास व्यय ही लिया जायेगा।

दिनेश, आचार्य ९४११०२६७७५ | राजीव, प्राचार्य ९४१०६३८४४४ | स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक, मो. ९८३७४०२१९२

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
के तत्वावधान में

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में

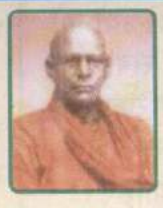

दिनांक ०७, ०८, ०९, १० जून २०१९ दिन- शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक **"बृहद् योग शिविर का आयोजन"** किया जा रहा है तथा दिनांक **09.06.2019 रविवार** को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की अन्तरंग सभा की बैठक पूर्वाह्न ११.०० बजे से प्रारम्भ होगी जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं
कृपया ईष्ट मित्रों सहित शिविर में भाग लेकर योग, भजन प्रवचन का लाभ उठायें।

स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)

डा. धीरज सिंह
प्रधान

अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

नोट : योग शिविर में आने वाले महानुभावों से निवेदन है कि मौसम के अनुकूल हेतु वस्त्र और कम्बल अवश्य साथ लायें।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 2 जून से 16 जून 2019

स्थान :गुरूकुल शिवालिक अलियासपुर, अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रवेश शुल्क : शाखानायक : ५००/- रूपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए ६००/- रूपये है (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह ९९९१७०००३४ से सम्पर्क करें।

-सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, ९४१४७८९४६१

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।